भारत सरकार के RNI द्वारा पंजीकृत

चूड़ामणि अनुभव

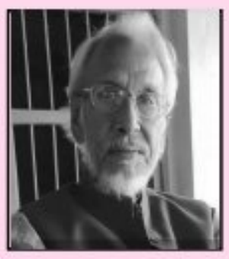
ग्रामीण सरोकार के प्रति समर्पित समाचार पत्र

email : chooramanianubhav@gmail.com | बेगूसराय से प्रकाशित हिन्दी मासिक | PRGI No. BHHIN/25/A5098

वर्ष–1 | अंक : 09 | सितंबर, 2026 | पृष्ठ–04 | सहयोग राशि : 5/–

सम्पादकीय...

राजनीति और साहित्य



सुखद संयोग है कि प्रति वर्ष सितम्बर माह एक साथ तीन अलग–अलग तिथियों में शिक्षा, भाषा और साहित्य पर विचार–विमर्श का अवसर देता है। 5 को शिक्षक दिवस, 14 को हिन्दी दिवस और 23 सितम्बर को राष्ट्रकवि दिनकर की जयंती। तय तिथि के अनुसार ये तीनों दिवस कमोबेश देश के विभिन्न राज्यों में मनाए जाते हैं। खासकर हिन्दी पट्टी प्रदेशों में साहित्यजीवियों के प्रयास से हिन्दी दिवस एवं दिनकर जयंती चर्चा–परिचर्चा गोष्ठी सहित समारोह मनाने की परम्परा चलन में है। यह अच्छा संकेत है। क्योंकि किसी भी देश अथवा समाज का बहुआयामी विकास शिक्षा, भाषा और उसकी साहित्यिक सोच पर निर्भर करता है। यानि इसके भूल में सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कार ही उसकी सही पहचान होती है।

चिन्तनीय प्रश्न तो यह है कि आज जहां बाजारवादी तामझाम, आधुनिकता की चकाचौंध और डिजिटल संस्कृति के दौर में विचार मर रहे हैं, बुनियादी सोच धकियायी जा रही है, वहीं संवेदनहीन सत्ता व्यवस्था की नीयत और नीतियों के कारण देश का सांस्कृतिक ढांचा न केवल चरमरा उठा है, बल्कि सभ्यता एवं संस्कार पर मूल्यहीनता के काले बादल भी मंडरा रहे हैं। साहित्य नकारा साबित हो रहा है, अभिव्यक्ति अंकुश और सृजनशीलता ग्रहण महसूस रही है। कुल मिलाकर इसे दुनिया के सबसे बड़े गणतांत्रिक देश का दुर्भाग्य कहा जाएगा।

प्रसंगवश राजनीति और साहित्य को लेकर एक ऐसी सच्ची घटना जो आज के दौर में प्रासंगिक, प्रेरक और उल्लेखनीय भी है। बात उन दिनों की है जब दिनकर जी दिल्ली में राज्यसभा सदस्य और पंडित जवाहर लाल नेहरू देश के प्रधानमंत्री थे। दोनों में खूब बनती थी। एक बार नेहरू जी और दिनकर जी दोनों बातचीत करते हुए संसद की सीढ़ियों से उतर रहे थे। अचानक नेहरू जी के पांव चलते–चलते डगमगा गए। साथ चल रहे दिनकर जी ने उन्हें अपनी बांहों का सहारा देते हुए संभाल लिया। इसपर नेहरू जी ने दिनकर जी से कहा–अगर आप नहीं होते... तपका से दिनकर जी ने उत्तर देते हुए कहा–जब–जब राजनीति लड़खड़ाई है, साहित्य ने उसे संभाला है। उत्तर सुनकर नेहरू उन्हें देखते रह गए।

जय साहित्य, जय दिनकर

आवश्यकता है

चूड़ामणि अनुभव

ग्रामीण सरोकार के प्रति समर्पित समाचार पत्र

के बैनर तले ग्राम्य अंचल के वैसे युवक–युवतियों की जिनकी रूचि पत्रकारिता और लेखन में है, किन्तु महानगर की तर्ज पर शिक्षण–प्रशिक्षण, अभ्यास और मार्ग दर्शन के अभाव में उनकी प्रतिभा विकसित नहीं हो पाती है। मौका है, अवसर से लाभ उठाने का। अपने खाली वक्त का इस्तेमाल करें। अवसर और दिशा चूडामणि अनुभव देगा।

पत्रकारिता, समाचार लेखन, आलेख, फीचर, पत्र लेखन, एंकरिंग सहित काव्य रचना कलम का हुनर, सुनहरा अवसर

संपर्क : 9939254475 / 9525634772

सुविधाओं के अभाव में पशुओं का नहीं हो रहा इलाज

मंझौल में बने पशु अस्पताल खुद बीमार

महेश भारती



मंझौल। राज बदलते रहा। पशुपालन घोटाले में मुख्यमंत्री, मंत्री, अफसर नेता जेल गए। लेकिन, पशुपालन घोटाले के दंश से नहीं उबरा है और आज भी नहीं बदली है बेगूसराय जिले के मंझौल अनुमंडल मुख्यालय में बनी प्रथम श्रेणी बिहारी सिंह पशु चिकित्सालय की हालात। आजादी के बाद के वर्ष। मंझौल के राभभज्जू सिंह एक संपन्न किसान थे। उनके पिता बिहारी सिंह की मृत्यु हुई तो बारह गांवा भोज के लिए ग्रामीणों की बैठक हुई। गांव के आजादी के बाद देश के नवनिर्माण में लगे नौजवानों का प्रस्ताव आया महाभोज में बहुत खर्च आएगा। गांव और इलाके में मवेशियों के लिए अस्पताल नहीं है। ऐसा हो कि भोज नहीं कर मवेशी अस्पताल के लिए जमीन दान कर दें। रामभज्जू सिंह तैयार हो गए। ग्रामीणों ने भी भोज के बदले मवेशी अस्पताल खोलने का समर्थन और स्वागत किया। रामभज्जू सिंह ने वर्तमान समय के मूल्य में 50 करोड़ की जमीन एसएच–55 पर दान में देकर इसके निर्माण का रास्ता खोल दिया। इसका शिलान्यास बिहार के कांग्रेस अध्यक्ष नंद कुमार सिंह

शेष भाग पेज 2 पर

बाढ़ से निपटने के लिए जिला प्रशासन तत्पर : जिलाधिकारी



बेगूसराय। गंगा नदी के लगातार बढ़ते जलस्तर को देखते हुए जिला प्रशासन, बेगूसराय अलर्ट मोड में है। संभावित बाढ़ से निपटने के लिए जिला आपदा प्रबंधन शाखा द्वारा व्यापक स्तर पर तैयारियाँ की गई हैं। प्रभावित क्षेत्रों में आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ–साथ जलस्तर एवं बाढ़ की संभावित स्थिति की लगातार निगरानी की जा रही है। डीएम ऋची पांडेय ने शाम्हो प्रखंड का निरीक्षण कर संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए। जिले के संभावित बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों को चिन्हित किया गया है। इसके तहत जिले के कुल 08 प्रखंडों की 39 पंचायतें, जिनमें 37 ग्राम पंचायत एवं 02 नगर पंचायत शामिल हैं, तथा कुल 189 गांव संभावित रूप से प्रभावित क्षेत्र के रूप में चिन्हित किए गए हैं।

जिले में कुल 267 नावों के परिचालन की व्यवस्था की गई है। इनमें 21 सरकारी नाव, निजी नाव मालिकों के साथ एकरारनामा के तहत 239 नाव तथा 07 मोटरबोट शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, साहेबकमाल प्रखंड के समस्तीपुर एवं संदलपुर ग्राम पंचायतों में आमजनों के आवागमन की सुविधा के लिए 05 नावों की निःशुल्क व्यवस्था की गई है। जिले में 228 सामुदायिक रसोई केन्द्र तथा 80 राहत शिविर केन्द्र चिन्हित किए गए हैं। इसके अलावा ड्राई राशन पैकेट तैयार करने के लिए 26 स्थल तथा आपातकालीन परिस्थितियों में हवाई सहायता के लिए 18 हेलीपैड स्थल चिन्हित किए गए हैं। आपदा की स्थिति में प्रभावित परिवारों को तत्काल राहत उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिले में 41,880 पॉलिथीन शीट्स भी उपलब्ध हैं।

चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 62 मोबाइल मेडिकल टीम, 19 अस्थायी मेडिकल कैंप तथा 29 स्थायी मेडिकल कैंप की व्यवस्था की गई है। 52 पशु कैंप चिन्हित किए गए हैं तथा पशुओं के उपचार के लिए 44 प्रकार की पशु दवाओं की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही पशुधन के लिए 2,500 क्विंटल पशुचारा जमा किया गया है। जिला प्रशासन ने आमजनों से अपील की है कि वे घबराएं नहीं तथा प्रशासन द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का पालन करें। किसी भी आपात स्थिति, सहायता अथवा बाढ़ से संबंधित सूचना के लिए आमजन जिला आपदा नियंत्रण कक्ष के दूरभाष संख्या 9279808780 पर संपर्क कर सकते हैं।

Scanned with OKEN Scanner



राष्ट्रकवि दिनकर जयंती पर विशेष

रामधारी से दिनकर तक का सफर

✍ प्रस्तुति : प्रवीण प्रियदर्शी

परिचय :
रामधारी सिंह दिनकर

जन्म :
23 सितम्बर, 1908 को, बिहार के तत्कालीन जिला मुंगेर (अब बेगूसराय) स्थित सिमरिया गांव में हुआ।

पारिवारिक स्थिति :
पिता का नाम बाबू रवि सिंह, माता मनरूप देवी, 1921 में श्यामवती देवी से विवाह। कुल चार संतानें हुई दो पुत्र, दो पुत्री। तीन भाईयों में दिनकर माझिल थे।

शिक्षा :
प्राथमिक शिक्षा गांव के स्कूल में। मिडिल स्कूल स्तर की शिक्षा बगल के गांव बारो से। 1928 ई. में 20 वर्ष की उम्र में मोकामा घाट स्थित एक हाई स्कूल से मैट्रिक उत्तीर्ण। मैट्रिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी के साथ हिन्दी विषय में राज्य में सर्वाधिक अंक लाने के लिए ''भूदेव'' स्वर्णपदक प्राप्त। इसी वर्ष पटना विश्वविद्यालय स्थित पटना कॉलेज में इंटरमीडिएट कला में नामांकन। 1932 में यहीं से इतिहास में बी. ए. (आनर्स) उत्तीर्ण।

नौकरी :
प्रधानाध्यापक (1933 से 1934 तक) बरबीघा हाई स्कूल, मुंगेर में। सहायक निबंधक (विहार सरकार के राजस्व विभाग में) 1934 में नौकरी शुरू की। 1942 तक इस विभाग में रहे। युद्ध प्रचार विभाग 1943 में यहां तबादला। 1946 में त्याग पत्र। उपनिदेशक (जनसंपर्क विभाग, बिहार सरकार) 1947 से 1950 तक। हिन्दी प्राध्यापक बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (1950 से 1952 तक) में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। कुलपति 1964 में भागलपुर विश्वविद्यालय (नया नाम तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय) के कुलपति नियुक्त। संसदीय सलाहकार 1965 से 1971 तक भारत सरकार के गृह मंत्रालय में हिन्दी सलाहकार रहे।

संसदीय जीवन :
1952 से 1964 तक राज्य सभा के सदस्य रहे।

विदेश भ्रमण – सन् 1955 से 1971 के बीच इंगलैंड समेत यूरोप, चीन, रूस, मॉरीशस, जर्मनी की यात्रा।

सम्मान/पुरस्कार
1948 में कुरूक्षेत्र पर साहित्यकार संसद, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, उत्तर प्रदेश तथा भारत सरकार द्वारा पुरस्कार
1956 में ''संस्कृति के चार अध्याय'' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार
1959 में पदमभूषण
1962 में भागलपुर विश्वविद्यालय से डी.लिट् की उपाधि
1962 में ''सरस्वती'' पत्रिका की हीरक जयंती पर मैथिलीशरण गुप्त द्वारा ''मान पत्र'' प्रदान
1965 गुरूकुल महाविद्यालय द्वारा विद्यावाचस्पति की उपाधि
1968 में राजस्थान विद्यापीठ से ''साहित्य चूड़ामणि'' की उपाधि
1973 में काव्य संग्रह ''उर्वशी'' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार

निधन :
24 अप्रैल 1974 को मद्रास (चेन्नई) में। अगले दिन पटना में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार।

साहित्य सृजन :

काव्य पुस्तकें प्रकाशन काल (1928–1974)
विजय संदेश, प्रणभंग, रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वंद्व गीत, कुरूक्षेत्र, धूप–छांह, सामधेनी, बापू, इतिहास के आंसू, धूप और धुआं, मिर्च का मजा, रश्मिरथी, दिल्ली, नीम के पत्ते, नीलकुसुम, सूरज का ब्याह, चकवाल कवि श्री, सीपी और शंख, नए सुभाषित, रामधारी सिंह दिनकर, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, कोयला और कवित्व, कवित्व, मृत्ति तिलक, आत्मा की आंखें, दिनकर की सूक्तियां, हारे को हरिनाम, दिनकर के गीत, संचयिता, रश्मिलोक, उर्वशी तथा अन्य श्रृंगार रचनाएँ।

गद्य की पुस्तकें प्रकाशन काल (1949–1974)
चित्तौड़ का साका, रेती के फूल, हमारी सांस्कृतिक एकता, भारत की सांस्कृतिक कहानी, संस्कृति के चार अध्याय, उजली आग, देश–विदेश, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, धर्म, नैतिकता और विज्ञान, वट–पीपल, साहित्यमुखी, राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी, हे राम, संस्मरण और श्रद्धांजलियां, मेरी यात्राएं, भारतीय एकता, दिनकर की डायरी, चेतना की शिखा, आधुनिक बोध, विवाह की मुसीबतें, दिनकर के पत्र (सं. कन्हैयालाल फूलफगर), शेष–निःशेष (सं. कन्हैयालाल फूलफगर)

सिमरिया में लगेगा राजनेताओं व साहित्यकारों का मेला

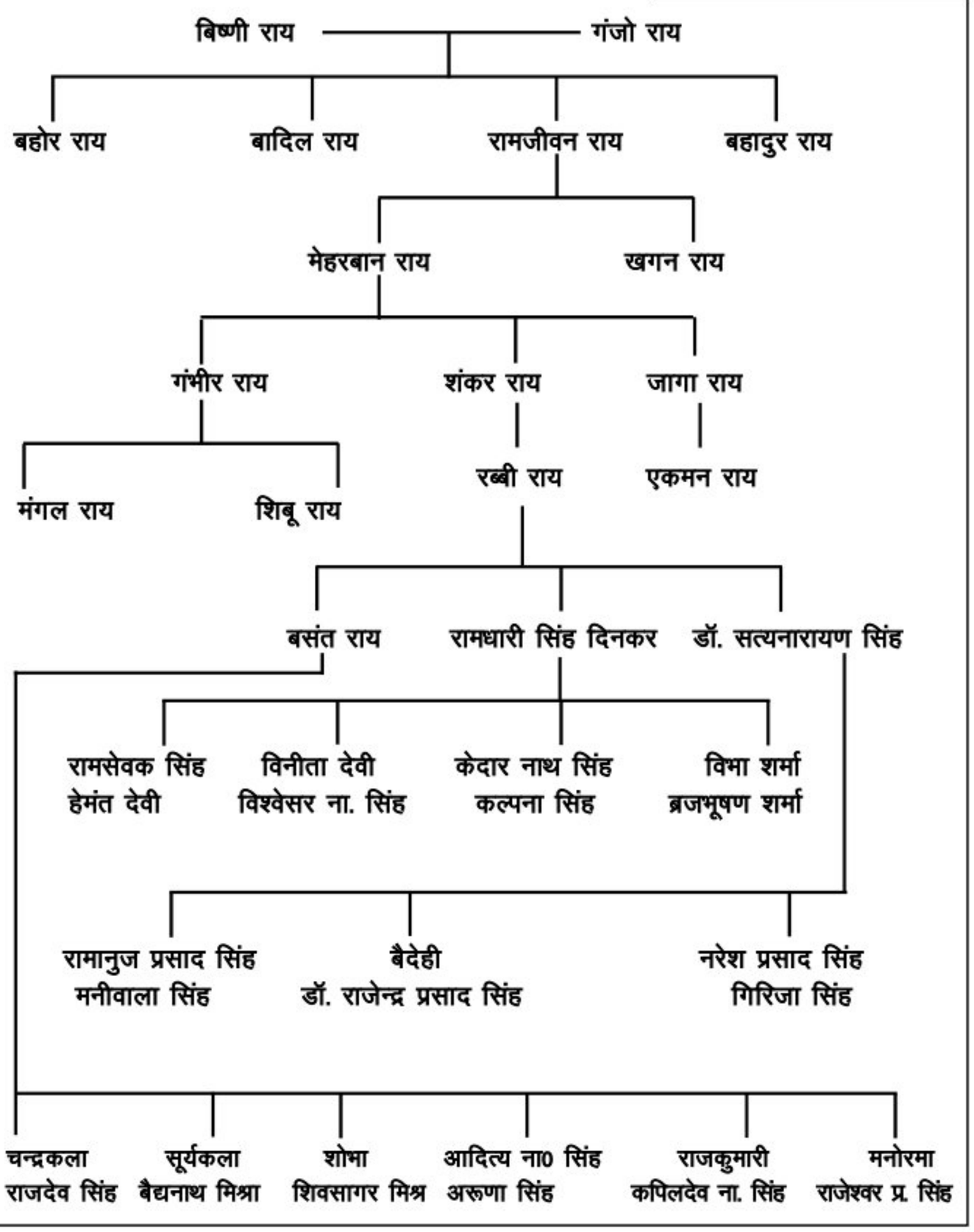
दिनकर की जन्मभूमि सिमरिया अपने सपूत राष्ट्रकवि दिनकर की जयंती हर वर्ष धूमधाम से मनाती है। इस वर्ष भी सिमरिया में 12 दिवसीय दिनकर जयंती मनाई जाएगी। 13 सितंबर 2026 से दिनकर जयंती की शुरूआत होती और इसका समापन 24 सितंबर 2026 देर रात विराट कवि सम्मेलन के साथ संपन्न होगा। दिनकर जयंती की शुरूआत औंटा–सिमरिया सिक्स लेन पुल स्थित गोलंबर से की जाएगी। उसके बाद 14 से 20 सितंबर तक विभिन्न विद्यालयों में दिनकर जयंती मनाई जाएगी। इनमें प्रमुख रूप से बरबीघा प्लस टू स्कूल जहां दिनकर जी ने प्रथम नौकरी हेडमास्टर के तौर पर की थी, वहां दिनकर जयंती मनाई जाएगी। वहीं मोकामा हाईस्कूल जहां से दिनकर जी मैट्रिक पास किए थे वहां भी जयंती समारोह मनाई जाएगी। 21 और 22 सितंबर 2026 को नुक्कड़ सभा का आयोजन सिमरिया एक व दो तथा आसापास के गांव में किया जाएगा। 23 सितंबर को राजनेताओं का आगमन होगा और 24 सितंबर को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के नामचीन साहित्यकारों का आगमन होगा। विराट कवि सम्मेलन के साथ समारोह संपन्न होगा। यह जानकारी दिनकर स्मृति समिति के सचिव प्रदीप कुमार ने दी।

पेज 1 का शेष भाग...मंझौल में बने पशु अस्पताल

ने 1955 में और उद्घाटन वर्ष 1958 में बिहार के तत्कालीन राज्यपाल डा जाकिर हुसैन साहब ने किया था। वर्तमान में यह मवेशी अस्पताल जर्जर बना है। इसके पुराने जर्जर भवन की मरम्मती या फिर से उनके पुनर्निर्माण की जरूरत है। इस प्रथम श्रेणी अस्पताल की चहारदीवारी टूटी हुई है, जिससे वहां असामाजिक तत्वों का बेरोकटोक आना–जाना लगा रहता है। इससे अस्पताल की सुरक्षा व्यवस्था और सेवा प्रभावित होती है। यहां तत्काल चहारदीवारी निर्माण की जरूरत है। इस मवेशी परिसर में साफ–सफाई नहीं रहने और पूरे परिसर में जलजमाव रहने से अस्पताल की व्यवस्था प्रभावित होती है। यहां एम्बुलेंस कॉल सेवा समय पर नहीं लगने से बीमार मवेशियों को उसका लाभ नहीं मिल रहा है जबकि उसके डॉक्टर हैं। मवेशी अस्पताल का पुराना डॉक्टर क्वार्टर और परिसर में बरसों पूर्व बने कई अन्य भवन जर्जर और भुतही हवेली बनी हैं। जिनके जीर्णोद्धार की जरूरत है। इस अस्पताल की गाड़ी कमरे में कैद है और बरसों से उसका ताला नहीं खुला है। यहां स्टाफ की कमी है। मंझौल अनुमंडल क्षेत्र का यह सबसे बड़ा मवेशी अस्पताल है। इसमें सुविधा की कमी है और इसके तरफ सरकार और विभाग का ध्यान आकृष्ट कराना जरूरी है।

राष्ट्रकवि दिनकर की वंशावली

✍ प्रस्तुति : रामनाथ सिंह



Scanned with OKEN Scanner

दिनकर की गद्य पंक्तियां

✍ प्रस्तुति–प्रवीण प्रियदर्शी

◆पल के बाद की हिंदी कविता कला की पराजय और जीवन की जय की कविता है। (चक्रवाल की भूमिका)

◆किसी भी समाज में वैराग्य और संन्यासियों का आदर बढ़ता है तब गृहस्थ और नारी जाति के पर में उसी अनुपात में कमी आ जाती है। (चक्रवाल की भूमिका)

◆परिवर्तन जब मंद–मंद चलता है तब वह केवल परिवर्तन कहलाता है किंतु जब उसकी गति बहुत तीव्र हो जाती है तब उसे क्रांति कहते हैं। (चक्रवाल की भूमिका)

◆जो राजनीतिज्ञ परिणाम पर ध्यान दिए बिना जनता को अंधी कांति की ओर झोंकते हैं. साहित्य में उन्हें भी रोमांटिक कहने का रिवाज है। (चक्रवाल की भूमिका)

◆रोमांटिक विशेषण हम उस व्यक्ति के लिए रखते हैं जो बुद्धि से अधिक भावना के अधीन होता है। सभी कांतियां स्वभाव से रोमांटिक होती है। (चक्रवाल की भूमिका)

◆मनुष्य पशुओं से अधिक भिन्न है कि वह भावों का बुद्धि से नियंत्रण कर सकता है। भावुकता साहित्यकार का बड़ा गुण है, बल्कि कहना चाहिए कि उचित मात्रा में इस गुण के बिना कोई भी व्यक्ति कवि नहीं हो सकता। मेरी बुद्धि से कविता नहीं बनती किंतु कोरी भावुकता भी कविता के लिए और पर्याप्त है।
(चक्रवाल की भूमिका))

◆कला चेतन और अचेतन दोनों के मिश्रण में उत्पन्न स्थिति का नाम है एवं वह प्रकृति और मानव आत्मा के बीच सेतु का निर्माण करती है। (चक्रवाल की भूमिका)

◆छायावाद – युग की सबसे बड़ी देन यह रही कि उसके यंत्र गृह में एक समय करकस समझी जाने वाली खड़ी बोली गल कर मोम हो गई। (चक्रवाल की भूमिका)

◆कविता की महत्ता का कारण भावों की उच्चता नहीं अभिव्यक्ति की सफाई होती है। (चक्रवाल की भूमिका)

◆मनुष्य की संस्कृति जीवंत तभी रह सकती है जब उसका साहित्य ठहरा हुआ नहीं, प्रगतिशील हो तटस्थ या रुढ़ा हुआ नहीं, बल्कि संघर्षशील हो। कवि की कविता कवि के समान होती है। (चक्रवाल की भूमिका)

◆मनुष्य जाति का साहित्य भी उसी की रूचि के अनुरूप होगा। (वट पीपल)

◆जिसे हम आधुनिकता कहते हैं वह एक प्रक्रिया का नाम है। यह प्रक्रिया अंधविश्वास से निकलने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया है। आधुनिक वह है, जो मनुष्य की ऊंचाई, उसकी जाति या गोत्र से नहीं, बल्कि उसके कर्म से नापता है। आधुनिका वह है जो मनुष्य–मनुष्य को समान समझता है। (साहित्य मुखी)

◆राष्ट्रीयता लगभग पशु धर्म है भैंस अपने खूंटे पर किसी दूसरी भैंस को आने देना नहीं चाहती। यही भाव विकसित और परिमार्जित होकर मनुष्यों के बीच राष्ट्रीयता कहलाता है। जब तक राष्ट्रीयता है युद्ध होते रहेंगे। जब तक राष्ट्रीयता हैं, दुनिया देशों में बटी रहेगी। अंतर्राष्ट्रीय और शांति यह एक ही तत्व के दो नाम हैं।

◆युद्ध केवल ध्वंस का विस्फोट है। वह जीवन के लिए नहीं, मृत्यु के लिए लड़ा जाता है।

◆हम कविता में ऐसी प्राणवत्ता और गुणों की कठोरता चाहते हैं कि वह फिर से मनीषियों के अध्ययन और मनन की वस्तु बन जाए। –(काव्य की भूमिका)

◆कविता ने संसार की बड़ी सेवा की है। यह दुख में आँसू, सुख में हँसी और समर में तलवार बनकर मनुष्यों के साथ रही है। मनुष्य की चेतना को उर्ध्वमुखी रखने में कविता का बहुत प्रबल हाथ रहा है। (मिट्टी की ओर)

◆साहित्य युग का बिम्ब मात्र नहीं, बल्कि उसकी व्याख्या और निर्माण का प्रयास है। –(मिट्टी की ओर)

◆अगर कोई कलाकार कला की अकर्मण्यता में ही गौरव समझता हो अथवा आत्म अभिव्यक्ति में ही कला का चरम महत्व मानता हो, तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि उसने समाज श्री वस्तु–जगत के सामने अपनी पूरी पराजय स्वीकार कर ली है। –(मिट्टी की ओर)

◆साहित्य की स्वाभाविक प्रक्रिया अनुभूतियों का ग्रहण और उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति है। –(मिट्टी की ओर)

◆ भारत में जो रिनेशाँ (नवजागरण) आया, उसका सबसे बड़ा दोष यह रहा कि उसने हिन्दुओं और मुसलमानों की आँखों को घुमाकर उनके सिर के पीछे कर दिया।
– (रेती के फूल)

◆साहित्य स्वपनों को रूप और संदेशों को अमरत्व प्रदान करता है। शून्य में मंडराने वाले सपने सबसे पहले साहित्यकार को दिखाई पड़ते हैं। –(अर्द्धनारीश्वर)

◆शिक्षित व्यक्ति की पहचान यह है कि वह अपनी मातृभाषा का प्रयोग धड़ल्ले से करता है, वह विनम्र होता है, उसमें चिंतन की शक्ति होती है, उसका मस्तिष्क सतत विकासशील होता है एवं वह आलसी नहीं होता है। –(साहित्यमुखी)

◆मानवता के भावी उत्थान की दृष्टि से सबसे अच्छी सरकार वह है जो सबसे कम शासन करती है। – (साहित्यमुखी)

◆दुनिया का इतिहास दुनिया की असली अदालत है। उसका फैसला उन लोगों के खिलाफ कभी नहीं गया है, जो ज्यादा ताकतवर और ज्यादा पूरे मर्द थे। इस अदालत ने बराबर शक्ति और नस्ल की मजबूती पर इंसाफ और सच्चाई को कुर्बान किया है।–(शुद्ध कविता की खोज)

◆कविता हमें प्रेरणा भरी दृष्टि देती है। वह गतिमान जीवन का हमें स्पर्श कराती है और अंत में वह इस स्पर्श के द्वारा हममें कंपन और उल्लास भरती है। –(अर्धनारीश्वर)

◆कविता तो कवि की आत्मा का आलोक है, उसके हृदय का रस है जो बाहर की वस्तु का अवलंब लेकर फूट पड़ती है।

दिनकर की काव्य पंक्तियां

✍ प्रस्तुति–प्रवीण प्रियदर्शी

रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्गधीर, पर,
फिरा हमें गाडीव–गदा, लौटा दे अर्जुन–भीम वीर। (हुंकार)

कवि ! असाढ़ की इस रिमझिम में धनखेतों में जाने दो,
कृषक–सुन्दरी के स्वर में अटपटे गीत कुछ गाने दो,
दुखियों के केवल उत्सव में इस दम पर्व मनाने दो,
रोऊँगी खलिहानों में, खेतों में तो हर्षाने दो। (हुंकार)

जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है,
छूटे बैलों के संग, कभी जीवन में ऐसा याम नहीं है।
मुख में जीभ, शक्ति भुज में जीवन में सुख का नाम नहीं है,
वसन कहाँ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है। (हुंकार)

वे भी यहीं, दूध से जो अपने श्वानों को नहलाते हैं
वे बच्चे भी यहीं, कब्र में दूध–दूध ! जो चिल्लाते हैं! (हुंकार)

हटो व्योम के मेघ, पंथ से, स्वर्ग लूटने हम आते हैं,
दूध–दूध ओ वत्स ! तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं। (हुंकार)

लेना अनल–किरीट भाल पर ओ आशिक होनेवाले !
कालकूट पहले पी लेना, सुधा–बीज बोनेवाले ! (हुंकार)

धरकर चरण विजित श्रृंगों पर झंडा वहीं उड़ाते हैं,
अपनी ही ऊँगली पर जो खंजर की जंग छुड़ाते हैं? (हुंकार)

नींद कहाँ उनकी आँखों में जो धुन के मतवाले हैं?
गति की तृषा और बढ़ती, पड़ते पद में जब छाले हैं। (हुंकार)

मंजिल दूर नहीं अपनी, दुख का बोझा ढोनेवाले ! लेना
अनल–किरीट भाल पर ओ आशिक होनेवाले। (हुंकार)

जला अस्थियों बारी–बारी छिटकाई जिनने चिंगारी,
जो चढ़ गए पुण्य वेदी पर लिए बिना गरदन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल ! (हुंकार)

वैभव की दीवानी दिल्ली! कृषक मेघ की रानी दिल्ली !
अनाचार–अपमान, व्यंग्य की चुभती हुई कहानी दिल्ली !
(हुंकार)

तुम एक अनल–कण हो केवलय अनुकूल हवा लेकिन पाकर,
छप्पर तक जा सकते उड़कर, जीवन ज्योति जगा सकते,
अम्बर में आग लगा सकते। (हुंकार)

जो अशेष जीवन देता है, उसे मरण संताप नहींय जलकर
ज्वाला हुआ, उसे लगता ज्वाला का ताप नहीं। (हुंकार)

मसि की तो क्या बात? गली की ठिकरी मुझे भुलाती है,
जीते–जी लड़ मरूँ, मरे पर याद किसे फिर आती है? (हुंकार)

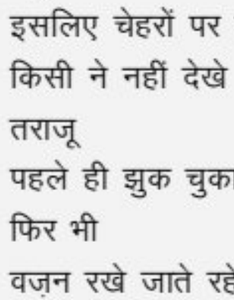
खूँ बहाया जा रहा इंसान का सींगवाले जानवर के प्यार में!
कौन सी तकदीर फोड़ी जा रही मस्जिदों की ईंट की दीवार में।
(हुंकार)

श्वानों को मिलते दूध–वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं,
माँ की हड्डी से चिपक, ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं। (हुंकार)

सुनूं क्या सिन्धु ! मैं गर्जन तुम्हारा?
स्वयं युगधर्म का हुंकार हूँ मैं,
दबी सी आग हूँ भीषण क्षुधा की,
दलित का मौन हाहाकार हूँ मैं (हुंकार)

कविता

निर्णय से पहले



✍ रत्ना भदौरिया

उसने कुछ नहीं मांगा
केवल अपनी हथेली
थोड़ी देर तक
उलटकर देखता रहा–
मानो रेखाएं
किसी और की नियति
लिख आई हों
सभा में
बहुत प्रकाश था
इसलिए चेहरों पर पड़े अंधेरे
किसी ने नहीं देखे
तराजू
पहले ही झुक चुका था
फिर भी
वज़न रखे जाते रहे–
ताकि न्याय
अपनी औपचारिकता निभा सके
धान की गंध
बहुत पहले
काग़ज की गंध में बदल चुकी थी
खलिहानों से अधिक
अलमारियां भरती रहीं
और पृथ्वी
अपने ही गर्भ में
धीरे–धीरे हल्की होती गई
वह जिसने पत्थरों को
दीवार होने का अर्थ दिया
जिसने लोहे को
आकाश तक उठना सिखाया
जिसने अग्नि को
रोटी का स्वप्न दिया–
उसी की देह में
सबसे अधिक
रिक्तता बसाई गई
उस दिन
कोई युद्ध नहीं हुआ
केवल
एक प्रश्न ने
मौन की ओर देखा
और मौन ने
अपनी आंखें
झुका लीं

◆

आशीर्वचन



बिना विघ्न–बाधा चूड़ामणि अनुभव का प्रकाशन
मानव–सेवा लक्ष्य के साथ अविराम गतिशील रहे,
मेरी हार्दिक शुभकामना है।

स्वामी चिदात्मन जी महाराज
सर्वमंगला अध्यात्म योग विद्यापीठ
सिद्धाश्रम, मां काली धाम सिमरिया धाम (बेगूसराय)

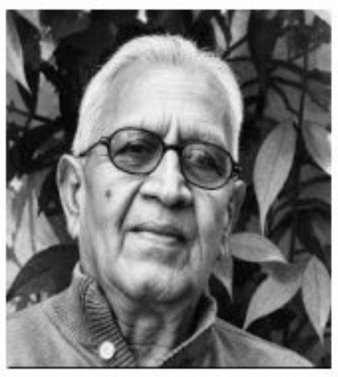
Scanned with OKEN Scanner

75 सदस्यीय कमिटी गठित

अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा की आमसभा संपन्न

बेगूसराय। अखिल भारतीय भूमिहार ब्राह्मण महासभा, बेगूसराय की आमसभा सेंट जोसेफ पब्लिक स्कूल, कालीनगर, रतनपुर बेगूसराय में हाल ही में संपन्न हुई। बैठक में बेगूसराय जिले में संगठन को सुदृढ़ एवं व्यापक स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से सर्वसम्मति से 25 सदस्यीय संरक्षक मंडल तथा 51 सदस्यीय कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। संस्था के कुल 75 सदस्यीय संगठनात्मक संरचना के निर्णय लिए गया। आमसभा में सर्वसम्मति से पूर्व मेयर नगरनिगम, बेगूसराय उपेंद्र प्रसाद सिंह, कपसिया को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। महासचिव पद पर विंग कमांडर रंजीत कुमार बीहट, कोषाध्यक्ष पद पर इंजीनियर रोशन कुमार, पवड़ा तथा संयोजक सह मुख्य प्रवक्ता पद पर रामबाबू सिंह, मोहनपुर को निर्वाचित किया गया। संगठन सचिव के रूप में राममूर्ति चौधरी मुखिया, अहियापुर एवं राम किंकर राय, मोखियारपुर, संयुक्त सचिव पद पर राजीव कुमार, कविया, मीडिया एवं जनसंपर्क प्रभारी के रूप में महेश भारती, मंझौल, संजय कुमार कैब, मखदुमपुर एवं कन्हैया कुमार, मंझौल, सदस्यता प्रभारी के रूप में श्री रमेश प्रसाद सिंह मुखिया, बिक्रमपुर एवं कौशल किशोर सिंह दनियालपुर, तथा प्रवक्ता के रूप में राजीव कुमार वत्स, मंसूरचक, विपिन कुमार (बलहपुर) एवं अशोक कुमार राय, जोकिया को सर्वसम्मति से चुना गया। इसके अतिरिक्त कार्यकारिणी के अन्य पदाधिकारियों एवं सदस्यों का भी सर्वसम्मति से चयन किया गया। 25 सदस्यीय संरक्षक मंडल में समाज के विभिन्न गोत्रों के वरिष्ठ एवं सम्मानित व्यक्तियों को स्थान दिया गया।

साहित्य जगत की अपूर्णीय क्षति, श्रद्धांजलि



बिहार राज्य गीत के रचयिता कवि व गीतकार सत्यनारायण का निधन 92 वर्ष की आयु में 27 अगस्त 2026 की देर रात कदमकुआं स्थित अपने आवास हुआ। उनके निधन की खबर से साहित्य जगत में शोक की लहर है। जेपी आंदोलन से बिहार गीत तक का सफर करने वाले कवि सत्यनारायण की साहित्यिक यात्रा थम गई।

सत्यनारायण का जन्म 13 सितंबर 1935 को भोजपुर जिले के कौलोडिहरी गांव में हुआ था। "मेरे भारत के कंठहार, तुझको शत–शत वंदन बिहार" गीत लिखा था। इस गीत का संगीत हरि प्रसाद चौरसिया और शिवकुमार शर्मा ने तैयार किया था। वर्तमान में वे हिंदी प्रगति समिति मंत्रिमंडल सचिवालय (राजभाषा विभाग) के अध्यक्ष थे।

वे 1993 में बिहार सरकार की सेवा से सेवानिवृत्त हुए थे। आरंभ के दिनों में वे 1974 में जेपी आंदोलन से जुड़े रहे और लोक नायक जयप्रकाश नारायण के करीबी माने जाते थे। उनके निधन से साहित्यकारों में शोक है।



शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस एवं दिनकर जयंती के अवसर पर भगवानपुर प्रखंड की समस्त जनता को हार्दिक शुभकामनाएं!

इन्द्रजीत कुमार

प्रखंड प्रमुख, भगवानपुर प्रखंड, बेगूसराय

शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस एवं दिनकर जयंती के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं!



रितेश कुमार सिंह

सामाजिक कार्यकर्ता, पैक्स अध्यक्ष प्रतिनिधि
पालीडीह, लखनपुर पंचायत भगवानपुर प्रखंड (बेगूसराय)



शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस एवं दिनकर जयंती के अवसर पर प्रखंड की समस्त जनता को हार्दिक मंगल कामनाएं!

पंकज कुमार

उपप्रमुख, भगवानपुर प्रखंड, बेगूसराय

शिक्षक दिवस, हिन्दी दिवस एवं दिनकर जयंती के अवसर पर अंचल के तमाम शिक्षक बंधुओं, विद्यार्थियों एवं शिक्षा प्रेमियों को हार्दिक शुभकामनाएं!



गोपाल कुमार

अंचल सचिव, प्राथमिक शिक्षक संघ, भगवानपुर प्रखंड (बेगूसराय)

मो०: 7766956222

BSM निरामया

हॉलिस्टीक केयर हास्पीटल

अंग्रेजी ढाला, केशावे, N.H. 31 बेगूसराय

ICU TRAUMA CENTRE

डॉ. रविशंकर सिंह

MBBS, MD, FCCS (USA)
Cardio, Dibetologist & Physician

हमारे यहां आयुष्मान् भारत के तहत सभी तरह के ऑपरेशन एवं इलाज होता है।

डॉ. गौरव

BDS, MDS



मुंह एवं दन्त सर्जन
फुल डेन्टल एण्ड मल्टी स्पेशलिटी सेन्टर

पता : सुभाष चौक (डी.सी. सिंह पेट्रोल पम्प के बगल में) बेगूसराय, मो0 : 8707381925

चूड़ामणि अनुभव परिवार की ओर से हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

लक्ष्य Library

- CCTV Survilance
- Fully AC & WiFi
- Newspaper & Magazine
- Parking Available
- Group Discussion
- Locker Available
- Saparate seat Boys & Girls
- R.O. Water
- Peacefull Environment
- 24X7 Open

राजेन्द्र–सुदामा मार्केट
बाईपास रोड, कुशल टोल (भवानन्दपुर)
मुजफ्फरा, बेगूसराय
Mob. 7808422890

Mob : 9801741682

Activelife Physiotherapy Centre एक्टीभलाईफ फिजियोथेरेपी सेंटर



डा० संतोष कुमार
बी.पी.टी. (बी.यू.) कन्सलटेन्ट, फिजियोथेरेपिस्ट

Dr Santosh Kumar
B.P.T. (B.U.)
Consultant Physiotherapist

पता : काली स्थान से पूरब, डाक बंगला रोड, डॉ० हेमन्त के सामने, प्रभात तारा स्कूल के बगल में, बेगूसराय

संरक्षक: राजेन्द्र महतो, श्याम बाबू आनंद कुमार

प्रधान सम्पादक: अशांत भोला, मो. 9939254475

उप सम्पादक: प्रवीण प्रियदर्शी, विजय कुमार सिंह जागृति शर्मा

सम्पादकीय कार्यालय: लक्ष्य लाइब्रेरी कैंपस, कुशल टोल, पोस्ट : पानापुर , जिला : बेगूसराय

चूड़ामणि अनुभव (मासिक) प्रकाशक एवं संपादक राजीव कुमार, हाउस नं. 107, ग्राम व पोस्ट : चूड़ामनचक, वार्ड नं. 14, ब्लॉक–भगवानपुर, बेगूसराय, (बिहार)–851133, मो. : 9525634772
मुद्रक : सोमेश कुमार चौधरी, दामोदरपुर पासोपुर, बेगूसराय (बिहार)–851112, मुद्रणालय : जागो गांव, जागो प्राइवेट आईटीआई दामोदरपुर, बेगूसराय, 851112, PRGI No. BHHIN/25/A5098

Scanned with OKEN Scanner